चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण

परिचय

हमारे देश में वर्तमान में शिक्षा प्रणाली का स्वरूप कोरे किताबी ज्ञान पर आधारित हैं. अंग्रेजों के शासन काल में जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित हुई थी, आज भी लगभग वही हैं. हमारा शिक्षा का स्तर एकदम गिरा हुआ, श्रम साध्य एवं व्यय साध्य हैं.

पाठ्यक्रम में विषय वस्तु में कोई समन्वय नहीं हैं.व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं स्वरोजगारोंमुख का अभाव होने से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी बेकारी बेरोजगारी के शिकार बन रहे हैं. सात ही उनमें शारीरिक श्रम से दूर रहने की और पाश्चात्यानु करण की बुरी प्रवृत्ति पनप रही हैं. शिक्षा का स्वरूप बहुस्तरीय होने पर भी आज के विद्यार्थियों को उसका पूरा लाभ नहीं मिल रहा हैं और वे परमुखापेक्षी बन रहे हैं. यह स्थिति अतीव चिंतनीय हैं. समय समय पर शिक्षा स्तर में सुधारात्मक उपाय करने से विद्यार्थियों को यह लाभ मिलेगा कि उनमें स्वावलम्बन की भावना पनपेगी, वे अपना सम्यक चारित्रिक बौद्धिक विकास कर सकेंगे और सामाजिक दायित्व का उचित निर्वाह कर सकेंगे.

शिक्षा सुधार से बेरोजगारी बेकारी नहीं रहेगी. युवा शक्ति का हित देश हित में समुचित उपयोग होगा तथा राष्ट्र के चहुमुखी विकास को उचित गति मिल सकेगी. इस तरह शिक्षा स्तर में सुधार लाने से विद्यार्थियों को अनेक लाभ मिल सकेंगे और वे अच्छे नागरिकों की भूमिका निभा सकेंगे.

विधार्थियों की शैक्षिक स्थिति से सम्बंधित प्रश्नावली द्वारा एकत्रित आंकड़ों का विशेषण निन्न प्रकार है:-

छात्रों हेतु

4.1 कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

तालिका :1 संसाधनों का अभाव

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	44	76	91	29	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	32	88	82	38	240
कुल	76	164	173	67	480

कुल 240 छात्रों में से 76 छात्रों ने यह कहा कि निजीविद्यालय में कक्षा में संसाधनों का अभाव है जबकि 164 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 173 छात्रों ने उनकी कक्षा में संसाधनों का अभाव से सहमति दिखाते हुए अपना जवाब दिया जबकि केवल 67 छात्र ने कहा कि अपनी कक्षा में संसाधनो का अभाव नहीं है। अतः यह यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय कि कक्षाओं में निजी विद्यालय की तुलना में कक्षा में संसाधनों का अभाव है।

आरेख :1 संसाधनों का अभाव

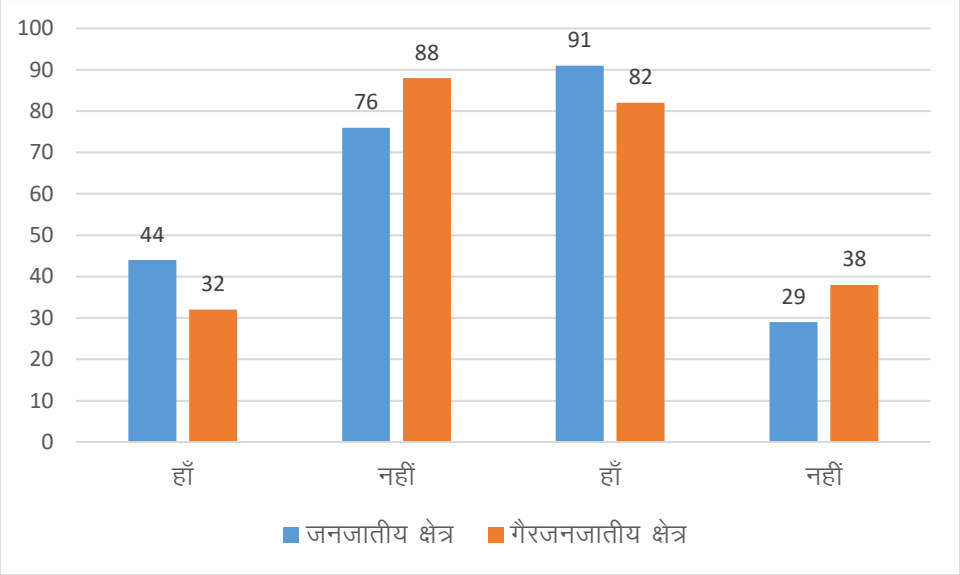

4.2 गतिविधि आपको कक्षा उपरान्त ही कराई जाती है।

तालिका :2 गतिविधि

विवरण	विद्यार्थी				
	निजी विद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	32	88	78	42	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	54	66	81	39	240
कुल	86	154	159	81	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शैक्षिक गतिविधि कक्षा उपरान्त ही करायी जाती है तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से 86 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियां कक्षा

उपरान्त करायी जाती है जबकि 154 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षाउपरान्त गतिविधियां नहीं करायी जाती है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 159 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियां कक्षा उपरान्त करायी जाती है जबकि केवल 81 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय में कक्षाउपरान्त गतिविधियां हीं करायी जाती है।

आरेख रू2 गतिविधि

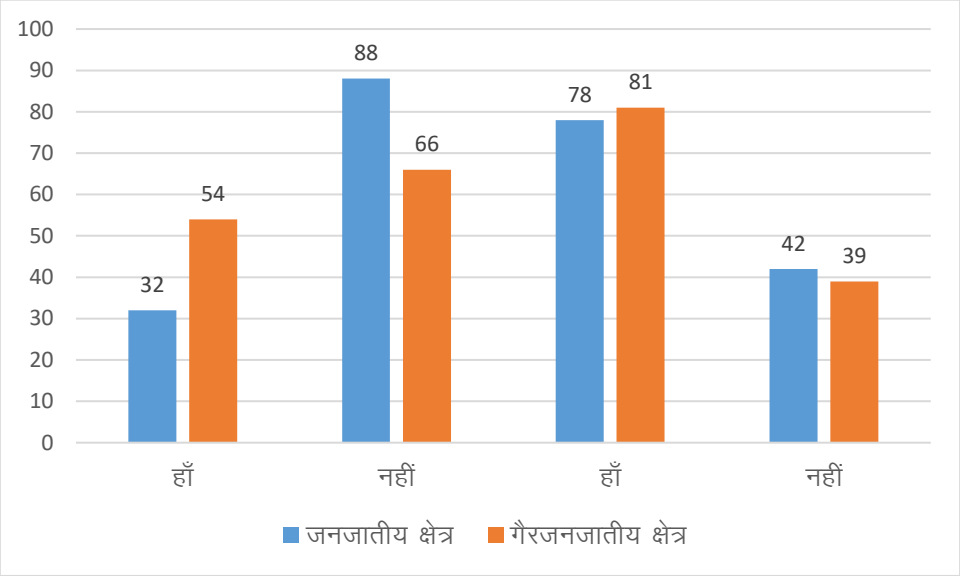

4.3 अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है।

तालिका :3 रूचिपूर्ण

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	21	99	44	76	240
गैर जनजातीय क्षेत्र	34	86	54	66	240
कुल	55	185	98	142	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापक द्वारा दी गई गतिविधियों को आप रूचिपूर्ण समझते है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से केवल 55 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि शैक्षिक गतिविधियों को वह रूचिपूर्ण समझते है जबकि 185 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए अपनी अरूचि दर्शायी। अतः नीजी विद्यालय में कक्षा में शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 98 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनकी शैक्षिक गतिविधियों को रूचिपूर्वक वह समझते है जबकि केवल 142 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति दर्शायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में भी शैक्षिक गतिविधियों को छात्र रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

इससे स्पष्ट होता है कि छात्र कक्षाउपरान्त गतिविधियों को रूचिपूर्वक नहीं समझते है।

आरेख :3 रूचिपूर्ण

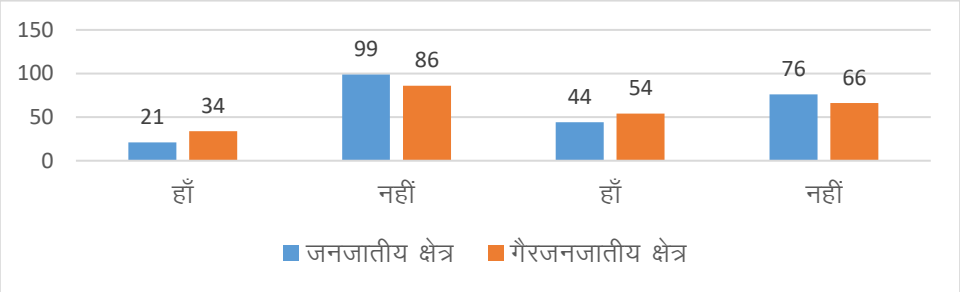

4.4 विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन होताहै।

तालिका :4 कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	48	72	28	92	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	78	42	36	84	240
कुल	126	114	64	176	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन होता है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से 126 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि उनके विद्यालय में समय समय पर कार्यशाला, सेमिनार का आयोजन किया जाता है, जबकि 114 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए उनके विद्यालय द्वारा समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन नहीं होना बताया है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 64 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय में समय–समय पर संबंधित कार्यशाला व सेमीनार का आयोजन होता जबकि केवल 176 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन नहीं होता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में समय–समय पर संबंधित कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन राजकीय विद्याालय के तुलना में अधिक होता है।

आरेख : 4 कार्यशाला, सेमीनार का आयोजन

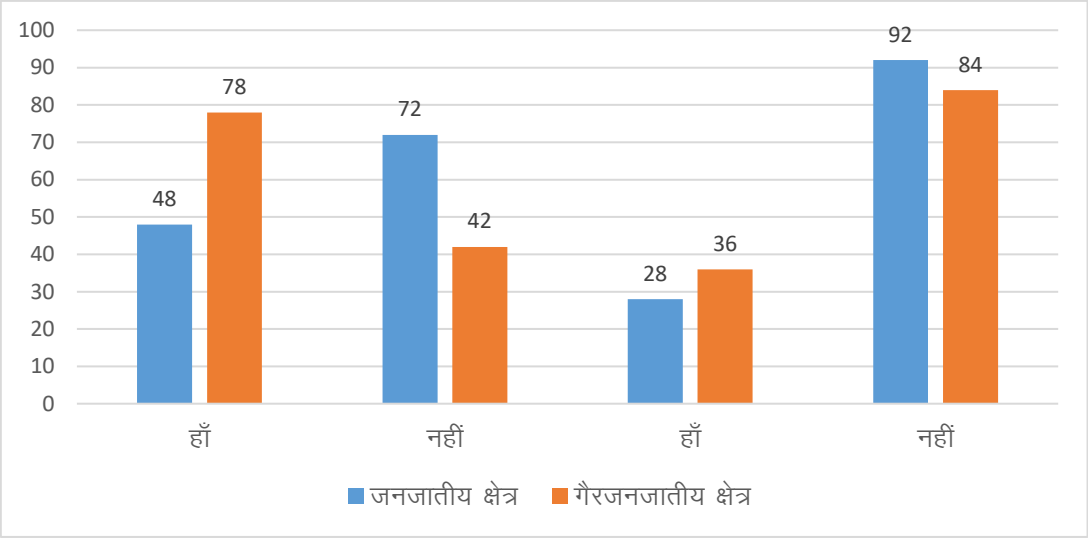

4.5 विद्यालय द्वारा आपको संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है।

तालिका :5 कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	58	62	30	90	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	69	51	42	78	240
कुल	127	113	72	168	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको विद्यालय द्वारा आपको संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है, तो निजीविद्यालय के कुल 240 छात्रों में से 127 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए कहा कि उनके विद्यालय के द्वारा संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु उन्हे प्रेरित किया जाता है, जबकि केवल 113 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे प्ररित नहीं किया जाता है।

वहीं राजकीय विद्यालय के भी केवल 72 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय विद्यालय द्वारा संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित किया जाता है जबकि 168 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में विद्यालय के द्वारा शिक्षण संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित नहीं किया जाता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों को शिक्षण संबंधित कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु राजकीय विद्यालय की तुलना में अधिक प्रेरित किया जाता है।

आरेख :5 कार्यक्रमों में हिस्सा लेने हेतु प्रेरित

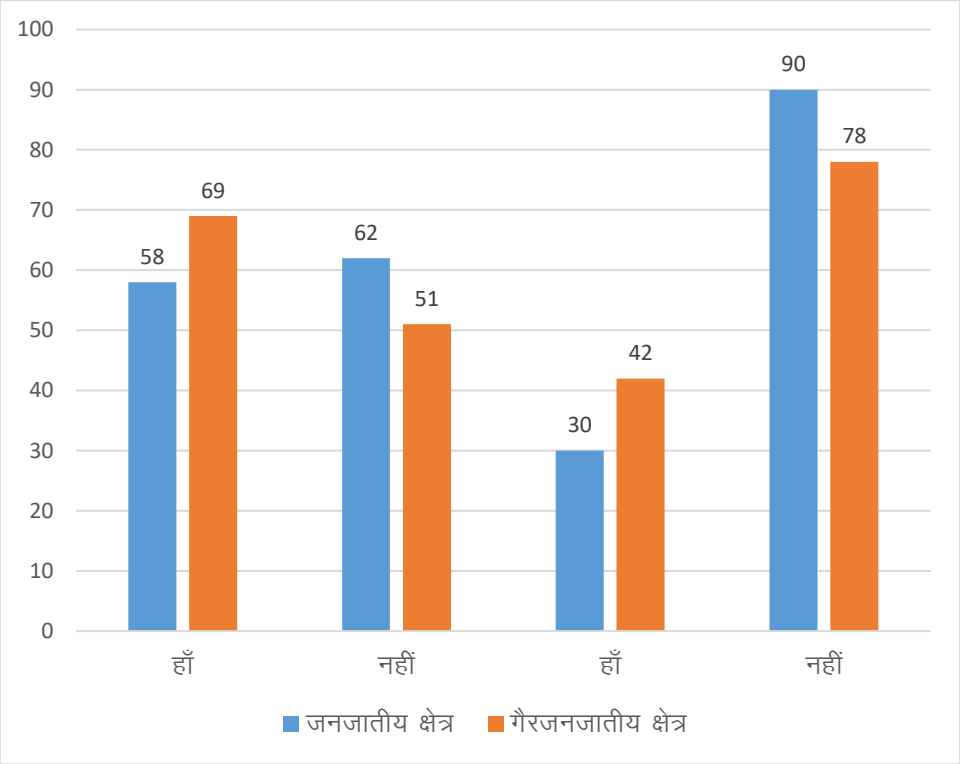

4.6 शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

तालिका :6 कठिनाई का सामना

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	58	62	78	42	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	38	82	68	52	240
कुल	96	144	146	94	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है, तो निजीविद्यालय के कुल 96 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में दिया, जबकि 144 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 146 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की उनके विद्यालय शिक्षण साम्रगी के प्रति आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है जबकि केवल 94 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी। अतः राजकीय विद्यालय कक्षा में विद्यालय के छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों को शिक्षण साम्रगी के प्रति कठिनाई का सामना राजकीय विद्यालय की तुलना में कम करना पड़ता है।

आरेख :6 कठिनाई का सामना

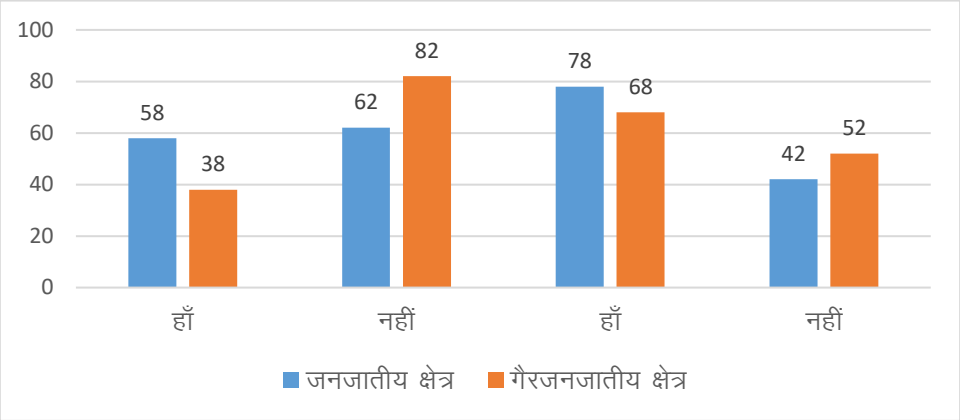

4.7 अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान आपको समझ पाते है।

तालिका :7 व्याख्यान

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	56	64	47	73	**240**
गैरजनजातीय क्षेत्र	74	46	67	53	**240**
कुल	130	110	114	126	**480**

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आप अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान समझ पाते है, तो निजीविद्यालय के कुल 130 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में दिया और बताया कि वह अध्यापकों के द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान को समझा पाते है, जबकि 110 छात्रों ने जवाब नहीं में देते हुए बताया है उन्हे अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान को वह नहीं समझ पाते है।

वहीं राजकीय विद्यालय के 114 छात्रों ने अपना जवाब हाँ में देते हुए सहमति जतायी की वह

अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान आपको समझ पाते है जबकि 126 छात्रों ने इस कथन से अपनी असहमति बतायी।

इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्र राजकीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में अध्यापकों द्वारा कक्षा में दिये गये व्याख्यान को कम समझ पाते है।

आरेख :7 व्याख्यान

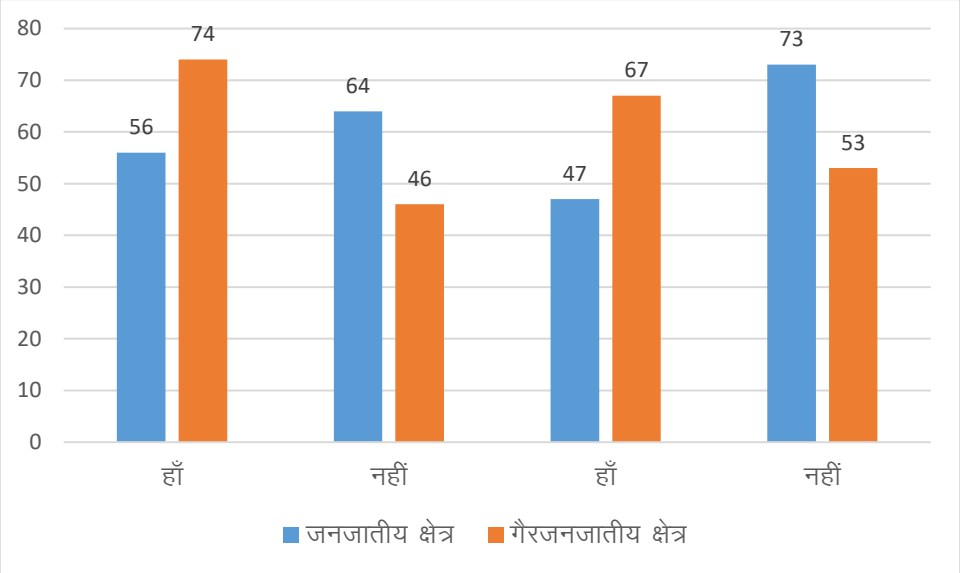

4.8 अध्यापकों द्वारा कक्षा में कराये गये संबंधित समस्याओं पर चर्चा की जाती है।

तालिका :8 समस्याओं पर चर्चा

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	68	52	29	91	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	90	30	40	80	240
कुल	158	82	69	171	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापकों द्वारा कक्षा में शिक्षण संबंधित समस्याओं पर चर्चा की जाती है तो निजीविद्यालय के 158 छात्रों ने कहा कि उनके कक्षा में अध्यापकों के द्वारा संबंधित समस्याओं पर चर्चा कि जाती है जबकि 82 छात्रों ने अपनी असहमति जतायी। वहीं राजकीय विद्यालयों 240 छात्रों में से कुल 171 छात्रों ने असहमति बताते हुए कहा की अध्यापकों के द्वारा कक्षा में समस्याओं पर संबंधित चर्चा नहीं कि जाती है।

उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रों से अध्यापकों द्वारा संबंधित समस्या पर चर्चा की जाती है जबकि राजकीय विद्यालय में कम की जाती है।

आरेख 8 : समस्याओं पर चर्चा

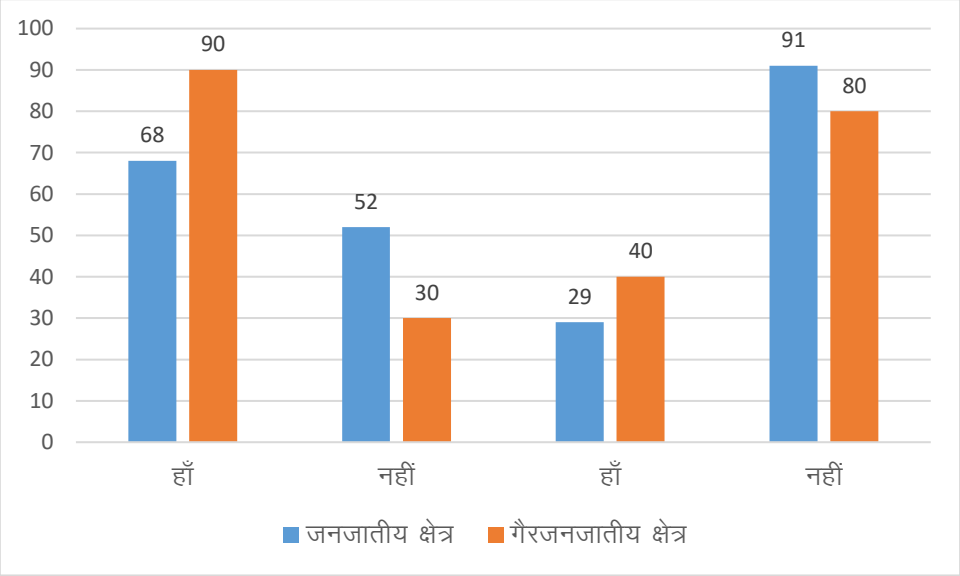

4.9 अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है।

तालिका 9: नये विचारों का ज्ञान

विवरण	विद्यार्थी				
	निजी विद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	48	72	40	80	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	66	54	84	36	240
कुल	114	126	124	116	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या अध्यापको द्वारा प्रश्न/उत्तर का आदान–प्रदान करते समय आपको नये विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है, तो निजी विद्यालय के 114 छात्र ने सहमति दिखायी जबकि 126 छात्रों ने अपनी असहमति

बतायी। वहीं राजकीय विद्यालय के 124 छात्रों ने इस कथन का सहमत किया व बाकि के 116 छात्रों ने इन्कार किया। अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालय के छात्रों के विचारों में ज्ञान अर्जन अध्यापको के द्वारा प्रश्न–उत्तर करते समय अधिक होता है जबकि निजी विद्यालयों में इसकी तुलना में कम होता है।

आरेख :9 नये विचारों का ज्ञान

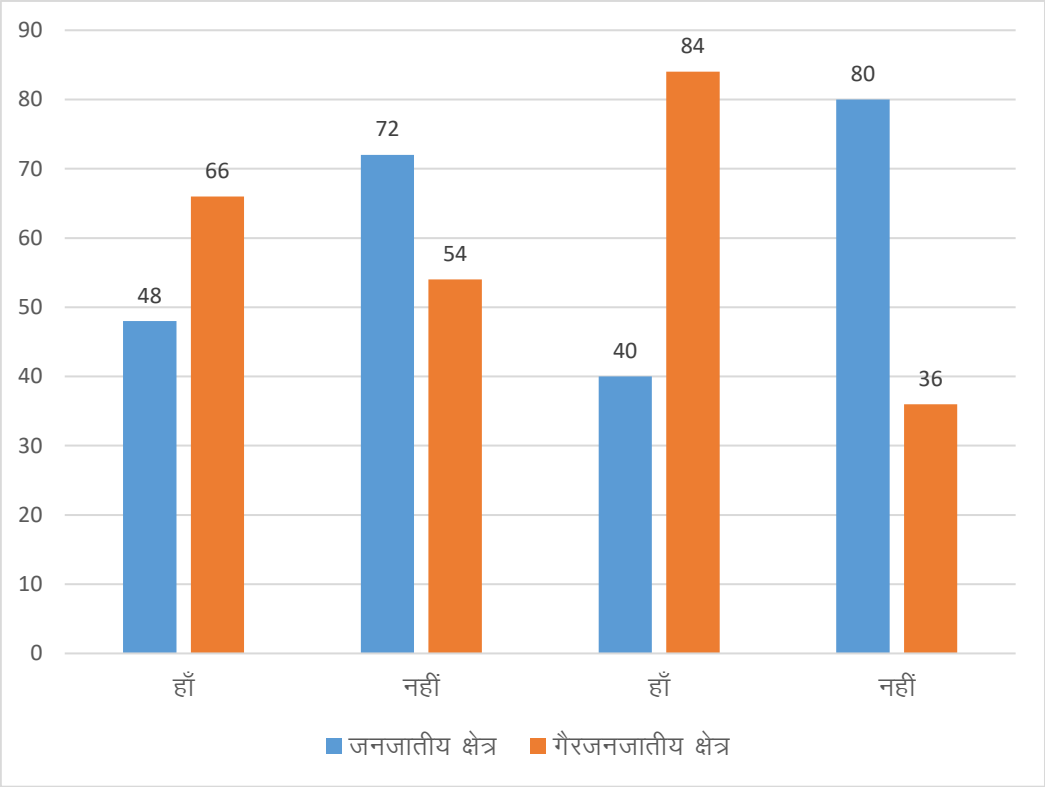

4.10 कक्षाओं में नवीन विधियों का प्रयोग किया जाता है?

तालिका :10 नवीन विधियों का प्रयोग

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	47	73	36	84	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	57	63	45	75	240
कुल	104	136	81	159	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या कक्षाओं में नवीन विधियों का प्रयोग किया जाता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 136 छात्रों ने असहमति दिखायी की नवीन विधियों का प्रयोग नहीं किया जाता, वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 159 छात्रों ने भी अपनी असहमति बतायी।

अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय व निजी विद्यालय के छात्रों में नवीन विधियों का प्रयोग नहीं होता है व अध्यापक वही पुरानी विधियों से शिक्षण प्रक्रिया का निर्वहन करते है।

आरेख :10 नवीन विधियों का प्रयोग

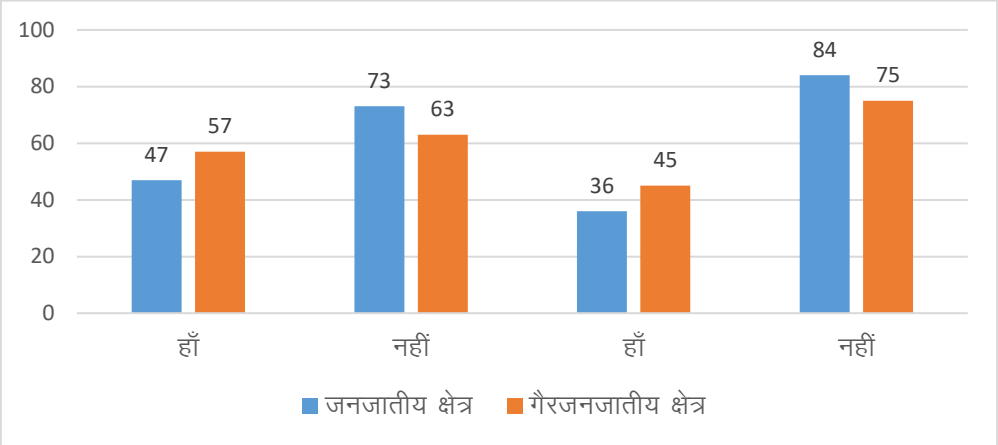

4.11 कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है।

तलिका :11 कक्षाओं का संचालन

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	102	18	85	35	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	79	41	90	30	240
कुल	181	59	175	65	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या कक्षाओं का संचालन निरन्तर चलता रहता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 181 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनकी कक्षा का संचालन निरन्तर चलता है व केवल 59 छात्रों ने नियमित संचालन न होने कि बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 175 छात्रों ने भी अपनी सहमति बतायी।

अतः यह स्पष्ट है कि राजकीय व निजी विद्यालय के छात्रों में कक्षाओं का संचालन निरन्तर नियमित रूप से चलता रहता है।

आरेख :11 कक्षाओं का संचालन

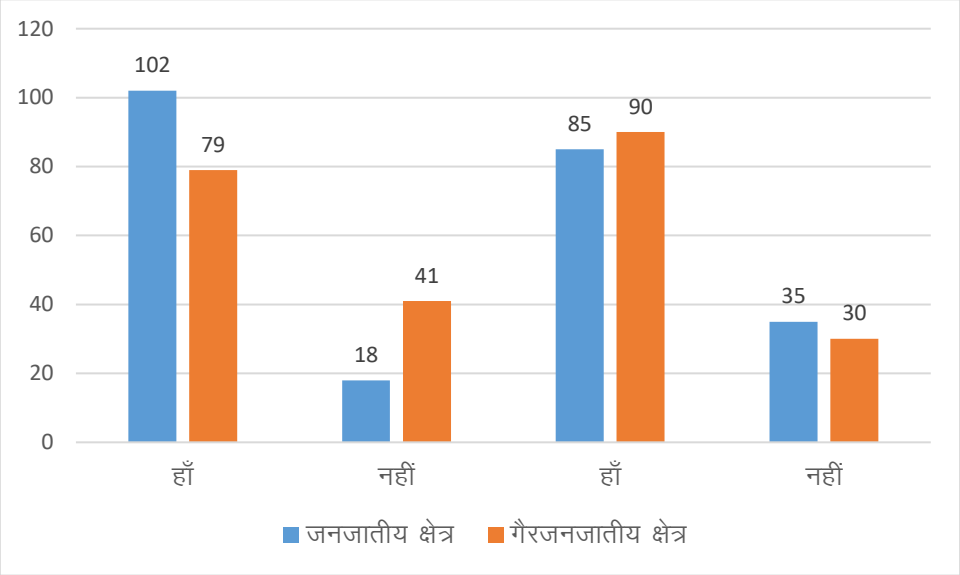

4.12 विद्यालय में छात्रावासों की पूर्ण सुविधा है।

तालिका :12 छात्रावासों की पूर्ण सुविधा

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	**26**	**94**	**85**	**35**	**240**
गैरजनजातीय क्षेत्र	**38**	**82**	**90**	**30**	**240**
कुल	64	176	175	65	**480**

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके विद्यालय में छात्रावासों की पूर्ण सुविधा है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 64 छात्रों ने सहमति दिखायी

की उनके विद्यालय में छात्रावास की पूर्ण सुविधा है व 176 छात्रों ने पूर्ण सुविधा न होने कि बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 175 छात्रों ने भी अपनी सहमति बतायी की उनके विद्यालय के छात्रावास की पूर्ण सुविधा है जबकि केवल 65 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालय में छात्रावास की पूर्ण सुविधा नही है जबकि राजकीय विद्यालय में छात्रावास की पूर्ण सुविधा है।

आरेख :12 छात्रावासों की पूर्ण सुविधा

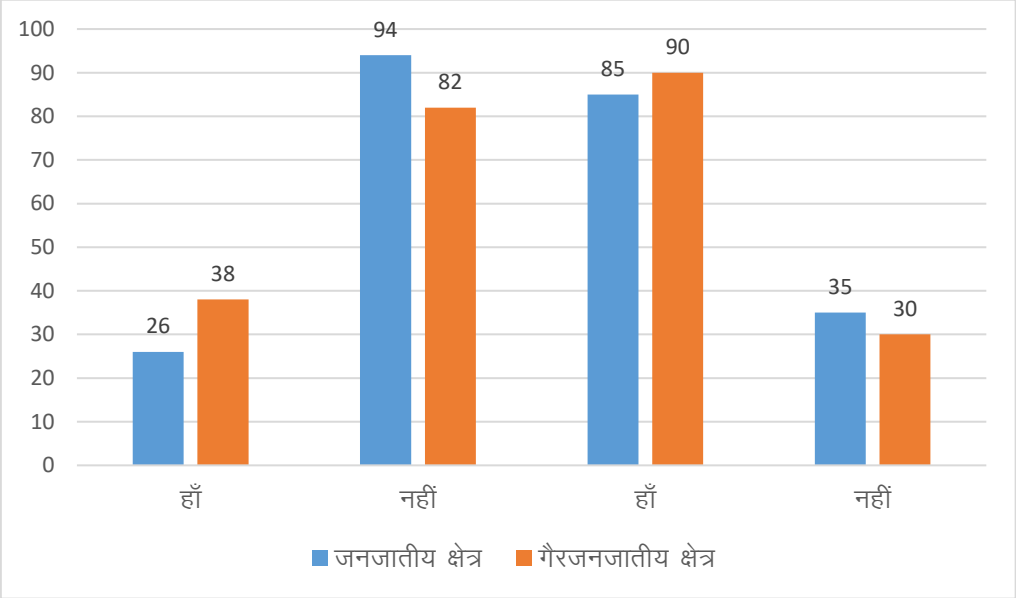

4.13 लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है।

तालिका :13 पत्र–पत्रिकाओं का अभाव

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	74	46	77	43	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	40	80	65	55	240
कुल	114	126	142	98	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके विद्यालय में लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 114 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके विद्यालय में लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है व 126 छात्रों ने अभाव नहीं होने की बात कही। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 142 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी की उनके विद्यालय के लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव होने की बात कही जबकि केवल 98 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय में लाईब्रेरी में पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है जबकि निजी विद्यालय में उस तुलना में कम अभाव है।

आरेख :13 पत्र–पत्रिकाओं का अभाव

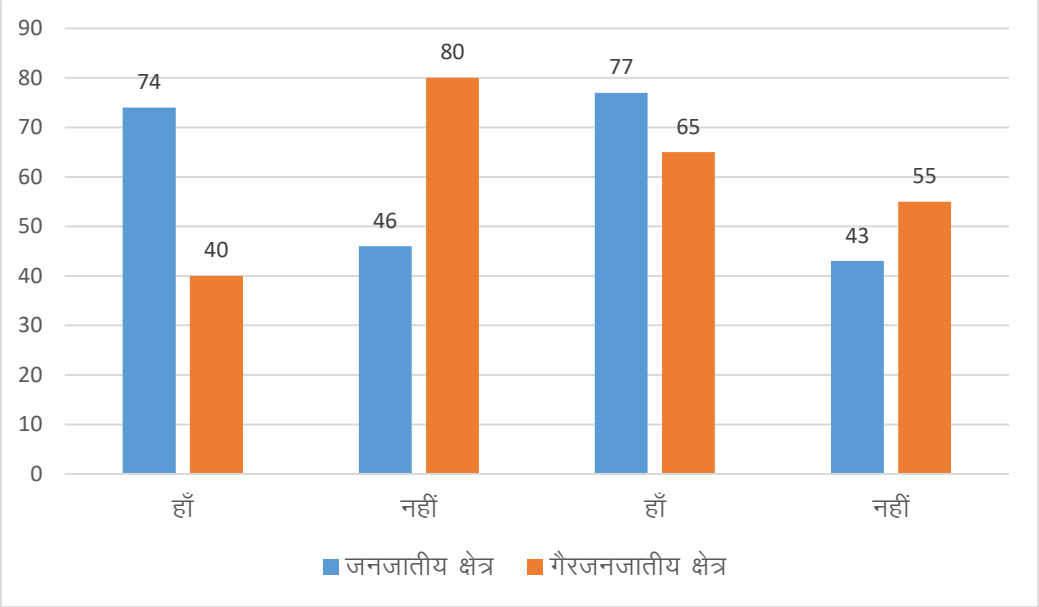

4.14 आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है।

तालिका :14 अध्ययन के अलावा अन्य कार्य

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	42	78	37	83	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	26	94	41	79	240
कुल	68	172	78	162	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपको घर पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 68 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके अन्य काम भी करना पडता है व 176 छात्रों ने कहा की वह कोई

अन्य काम नहीं करते है। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 78 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी उन्हें पर अध्ययन के अलावा अन्य कार्य करना पड़ता है जबकि केवल 162 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के अत्यधिक छात्र अध्ययन के अलावा अन्य कार्य नहीं करते है।

आरेख :14 अध्ययन के अलावा अन्य काय

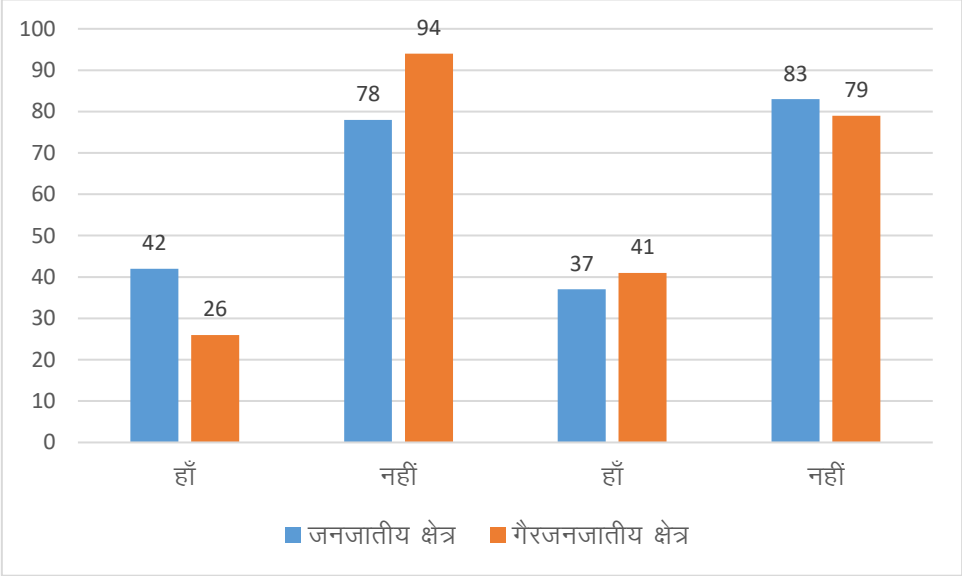

4.15 आपके पास आय का कोई स्त्रोत है।

तालिका :15 आय का स्त्रोत

विवरण	विद्यार्थी				
	निजीविद्यालय		राजकीय विद्यालय		योग
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	
जनजातीय क्षेत्र	18	102	28	92	240
गैरजनजातीय क्षेत्र	26	94	22	98	240
कुल	44	196	50	190	480

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आपके पास आय का कोई स्त्रोत है, तो निजी विद्यालय के 240 छात्रों में से 44 छात्रों ने सहमति दिखायी की उनके पास आय का स्त्रोत है व 196 छात्रों ने कहा की उनके पास कोई आय का स्त्रोंत नहीं है। वहीं राजकीय विद्यालय के भी 240 छात्रों में से 50 छात्रों ने अपनी सहमति बतायी की उनके पास आय का स्त्रोत है जबकि केवल 190 छात्रों ने असहमति बतायी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालय व निजी विद्यालय के छात्रों के पास आय का कोई स्त्रोंत नहीं है।

आरेख :15 आय का स्त्रोत

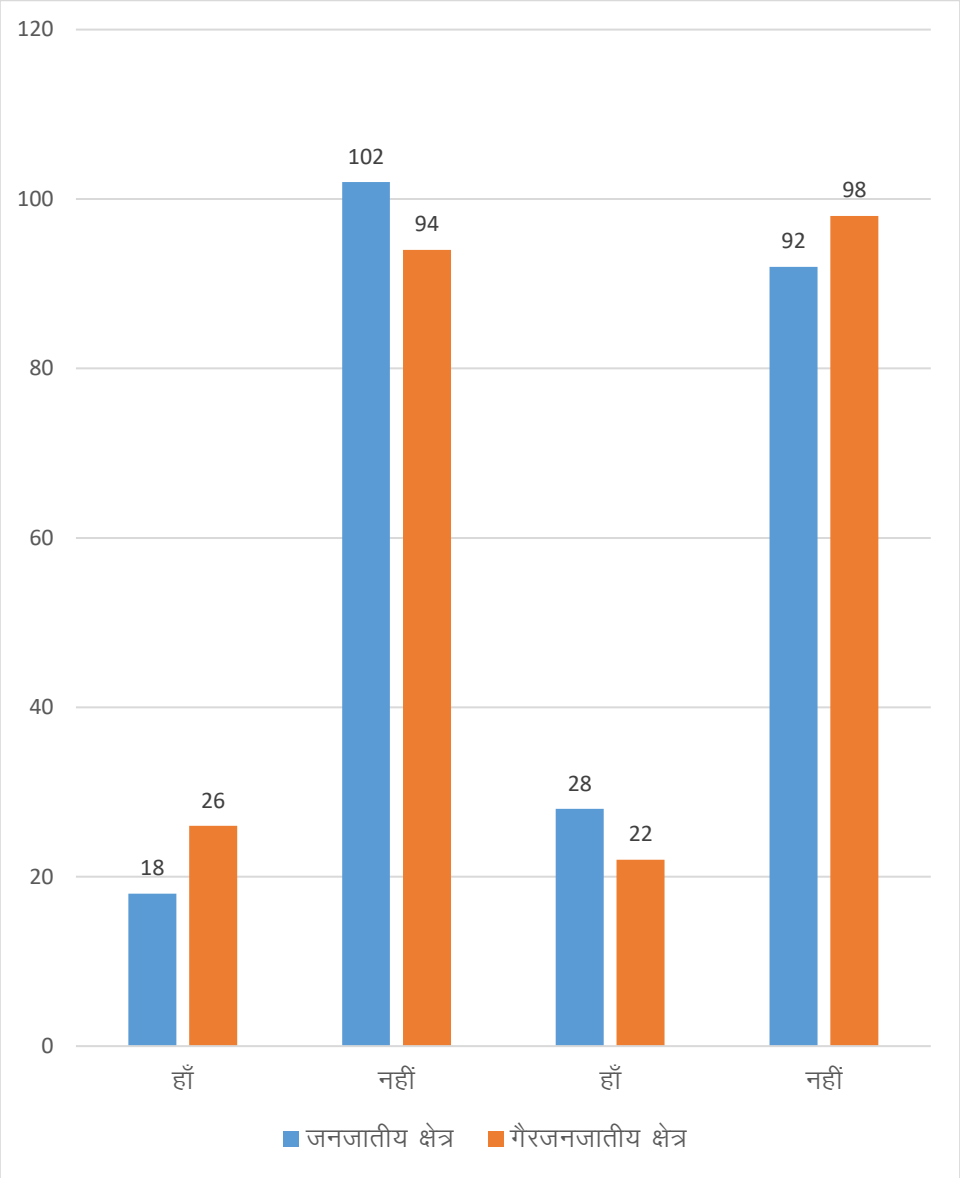

परिकल्पना परीक्षण

H1 जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :16 जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	36	44
Variance	266.5	469.5
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.924446	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-1.97546	
P(T<=t) one-tail	0.05971	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.119421	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.97546) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

आरेख : 16 t-Test: Paired Two Sample for Means

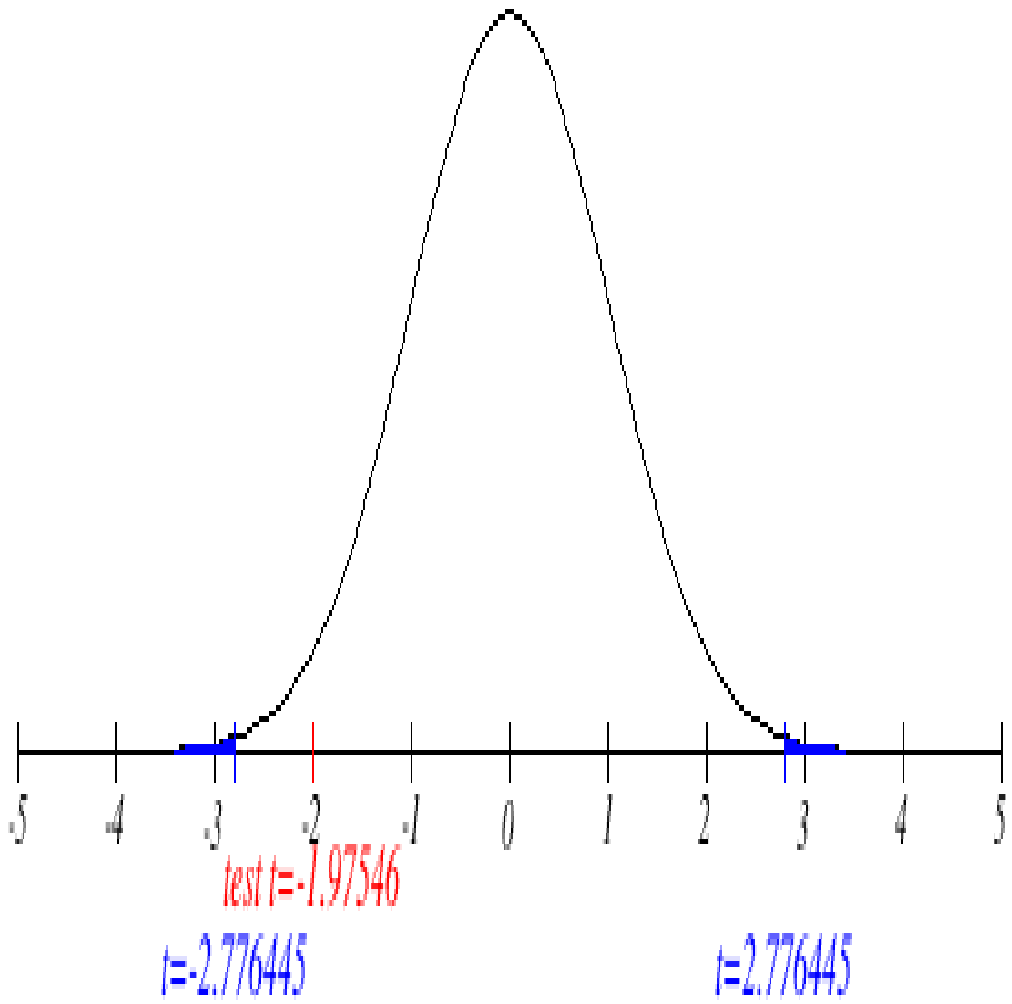
-5
-4
-3
-2
-1
0
1
2
3
4
5
test t=-1.97546
t=-2.776445
t=2.776445

H2 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :17 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	47.6	48.4
Variance	596.3	767.3
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.980459	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.29329	
P(T<=t) one-tail	0.391942	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.783884	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.29329) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

आरेख :17 t-Test: Paired Two Sample for Means

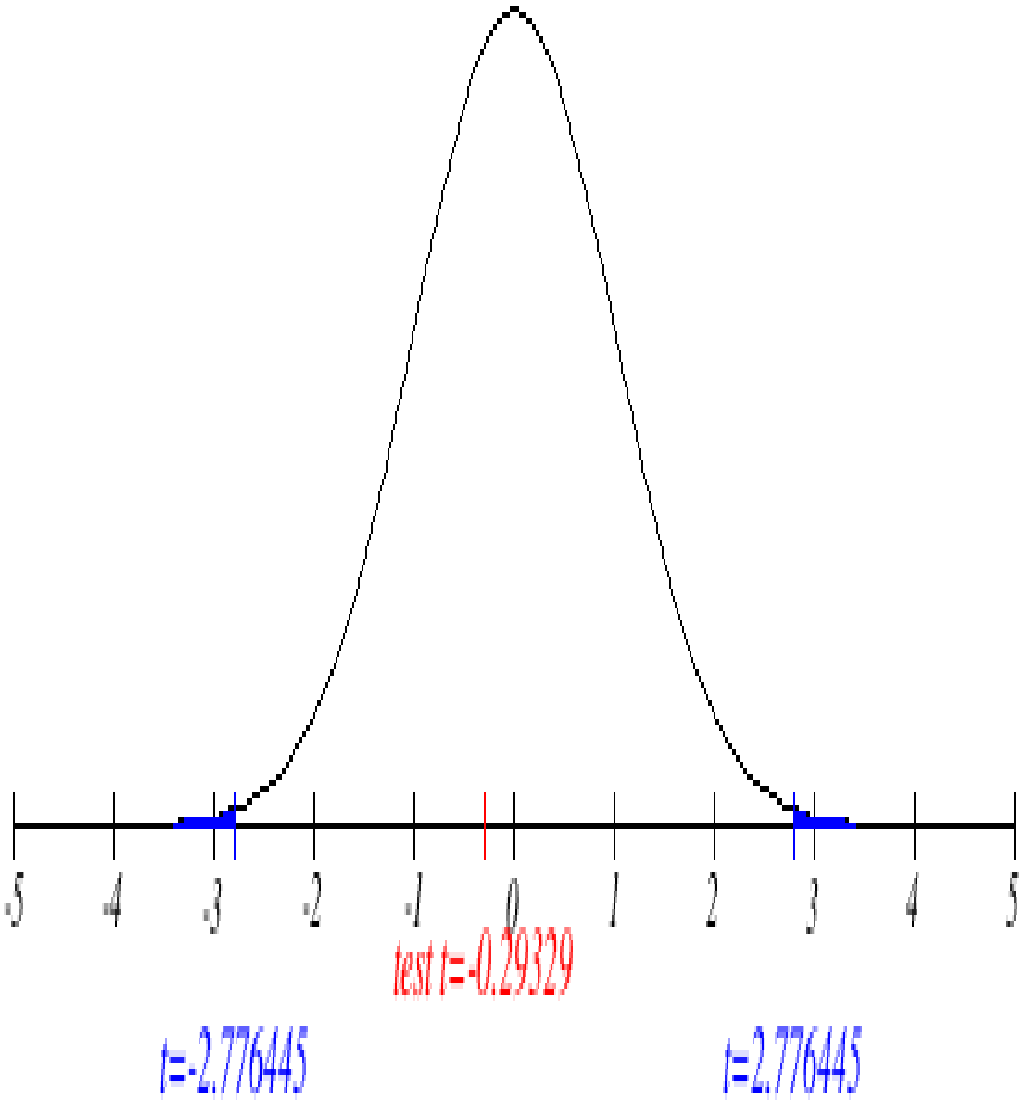
-5
-4
-3
-2
-1
0
1
2
3
4
5
test t=-0.29329
t=-2.776445
t=2.776445

H3 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :18 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	46	50
Variance	442.5	774.5
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.980066	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-1.07288	
P(T<=t) one-tail	0.171869	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.343739	
t Critical two-tail	2.776445	

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-1.07288) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में अंतर है।

आरेख :18 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

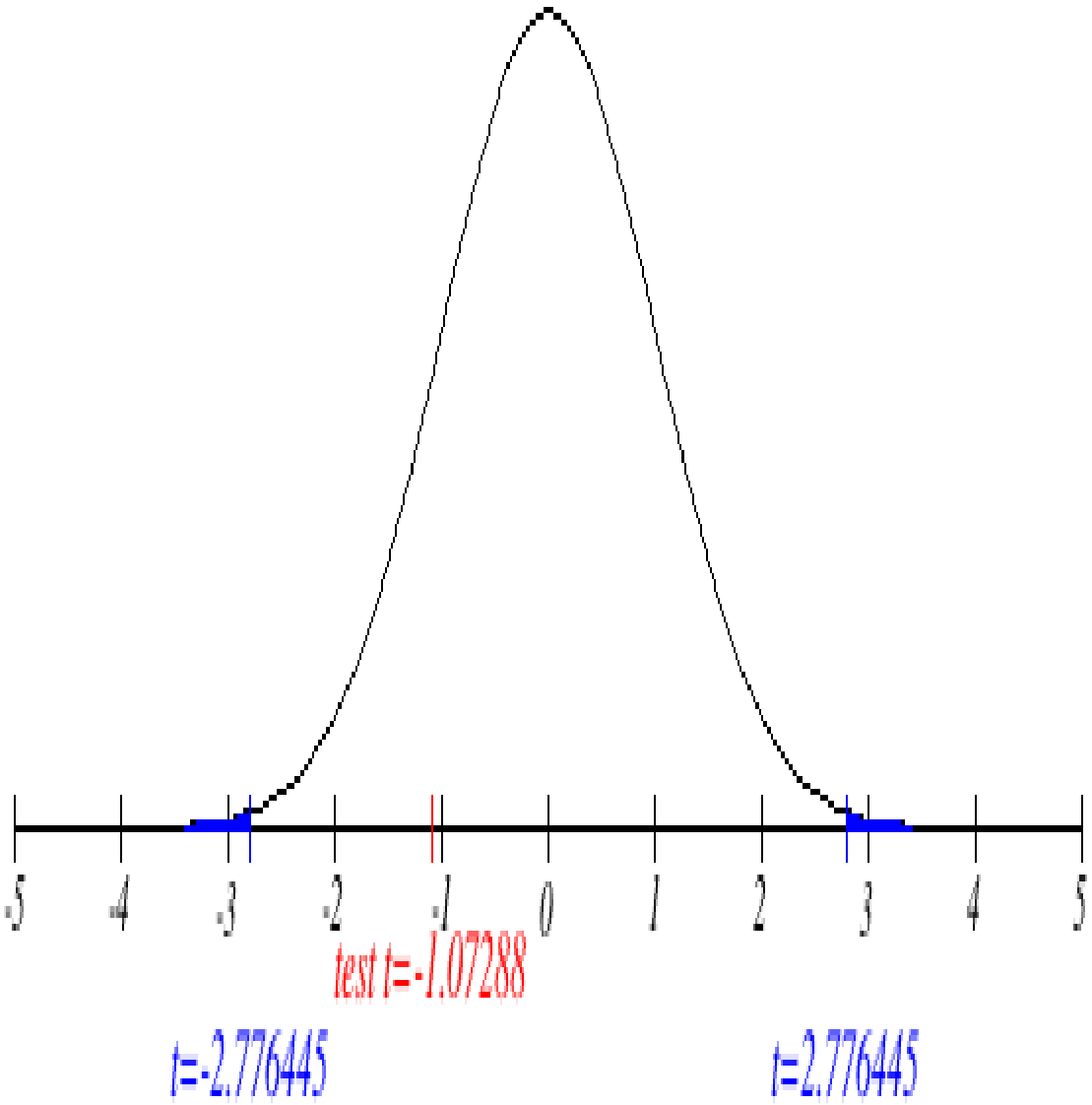

H4 जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :19 जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	47	49
Variance	629	771
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.958156	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.55258	
P(T<=t) one-tail	0.304988	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.609976	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातियएवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55258) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातिय एवं गैर जनजातीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में अंतरं है।

आरेख :19 **t-Test: Paired Two Sample for Means**

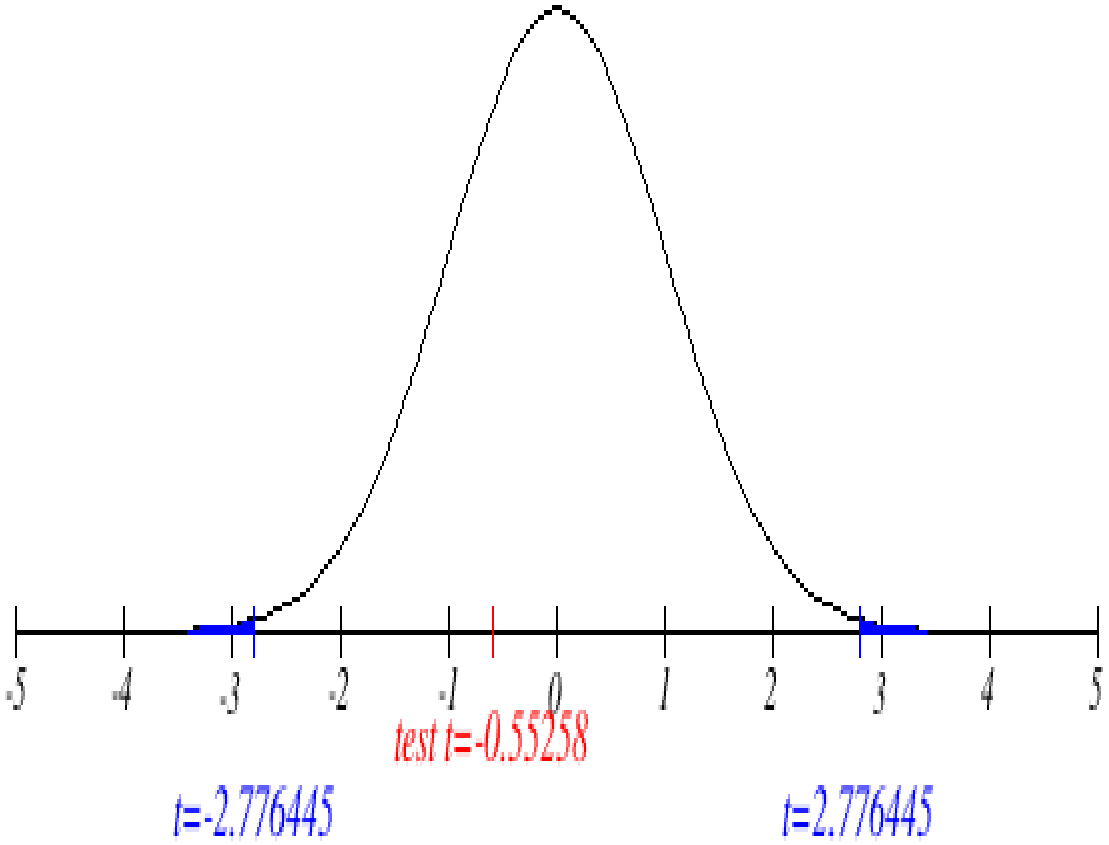

H5 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :20 जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	47.6	48.4
Variance	711.8	678.8
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.985751	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.39801	
P(T<=t) one-tail	0.355474	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.710948	
t Critical two-tail	2.776445	

जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.39801) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

आरेख :20 t-Test: Paired Two Sample for Means

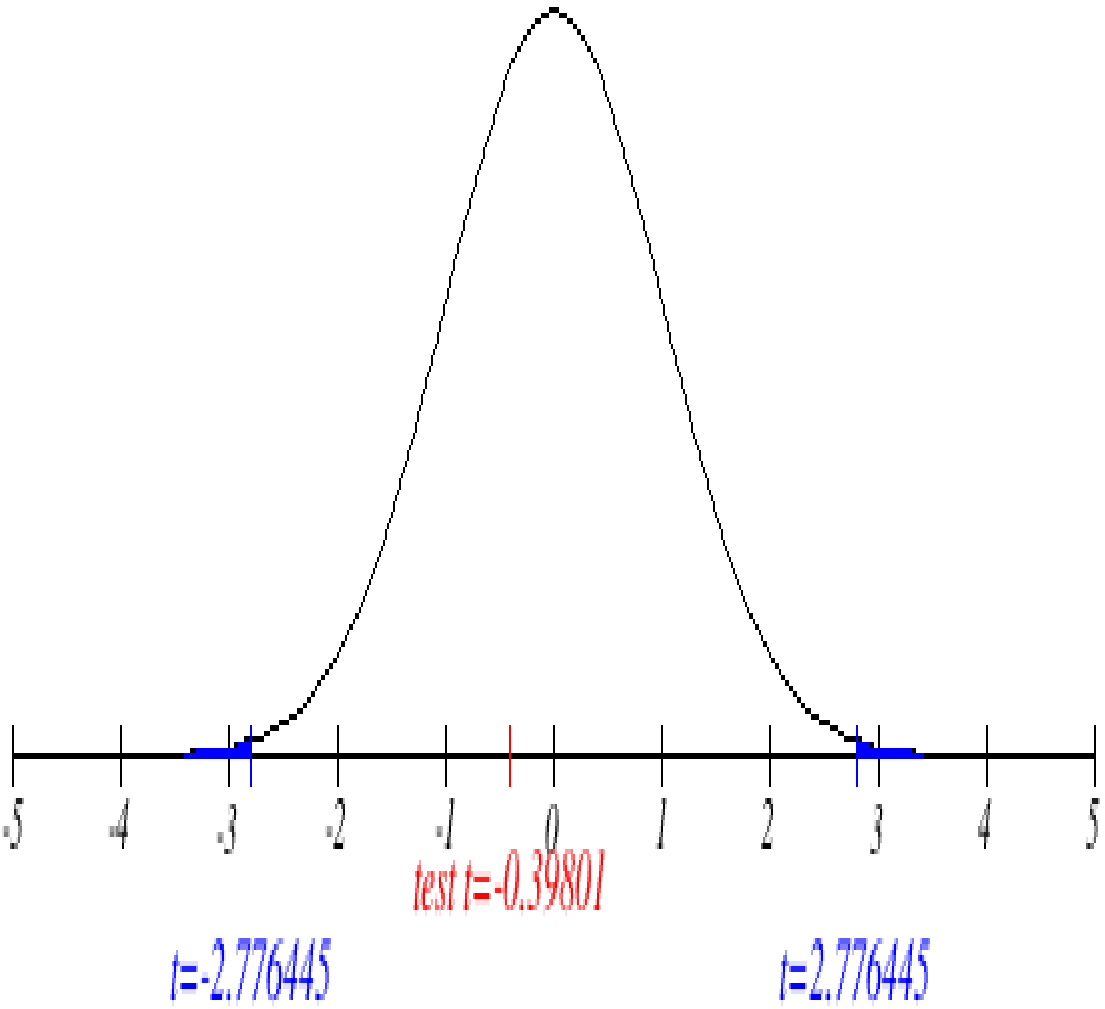
-5
-4
-3
-2
-1
0
1
2
3
4
5
test t=-0.39801
t=-2.776445
t=2.776445

H6 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका :21 गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर

t-Test: Paired Two Sample for Means		
	Variable 1	*Variable 2*
Mean	46.6	49.4
Variance	930.3	760.8
Observations	5	5
Pearson Correlation	0.929166	
Hypothesized Mean Difference	0	
df	4	
t Stat	-0.55405	
P(T<=t) one-tail	0.30453	
t Critical one-tail	2.131847	
P(T<=t) two-tail	0.60906	
t Critical two-tail	2.776445	

गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। कथन की सार्थकता की जांच के लिए जब पारिकल्पन परिक्षण किया गया एवं यह पाया गया की t crit(2.776445) का मान t Stat (-0.55405) के मान से ज्यादा है जो की शुन्य परिकल्पना की निष्क्रियता की तरफ इंगित करता है एवं यह माना जाता है की गैर जनजातीय क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में अंतर है।

आरेख :21 **t-Test: Paired Two Sample for Means**